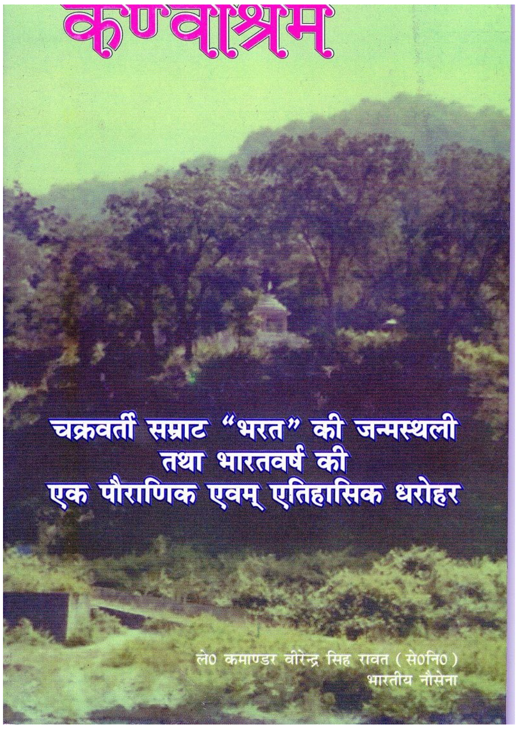
कण्वाश्रम
चक्रवर्ती सम्राट "भरत" की जन्मस्थली
तथा भारतवर्ष की
एक पौराणिक एवम् एतिहासिक धरोहर
ले0 कमाण्डर वीरेन्द्र सिह रावत (से0नि0)
भारतीय नौसेना

कण्वाश्रम

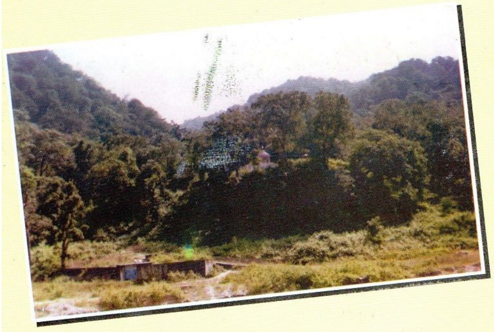

चक्रवर्ती सम्राट "भरत" की जन्मस्थली
तथा भारतवर्ष की
एक पौराणिक एवम् एतिहासिक धरोहर

ले0 कमाण्डर वीरेन्द्र सिह रावत (से0नि0)
भारतीय नौसेना

विषय सूची

1.	दो शब्द	1
2.	कण्वआश्रम का स्वरूप	5
3.	कण्वाश्रम के ऐतिहासिक तथ्य	9
4.	मालिनी	15
5.	शकुन्तला	19
6.	राजा दुष्यन्त	21
7.	भरत	25
8.	कण्वाश्रम का विघटन	29
9.	कण्वाश्रम का पुनरुत्थान	31
10.	कण्वाश्रम विकास समिति	39
11.	मेला	43
12.	कण्व घाटी में पौराणिक अवशेष	49
13.	कण्वाश्रम कैसे पहुँचे	55
14.	कण्वाश्रम के सम्बन्धित स्थल	56

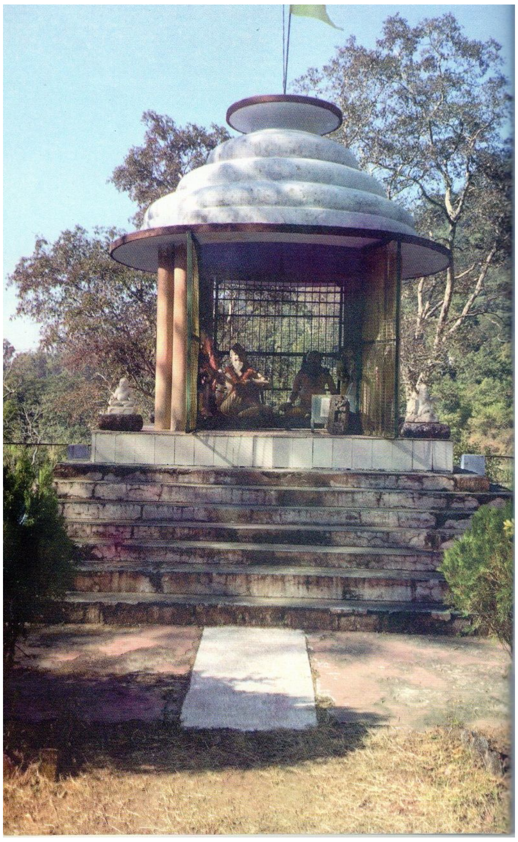

दो शब्द

कण्वाश्रम भारत के इतिहास में एक विराट स्तम्भ है, जिसके साथ इस देश की सांस्कृतिक, एतिहासिक, पौराणिक एवम् शैक्षिक विरासत जुड़ी है। इसलिए कण्वाश्रम के बारे में कुछ भी लिखना किसी के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। मैं न तो इतिहासकार हूँ और न पुरातत्व विषेशज्ञ, फिर भी अपनी सीमित जानकारी तथा स्थानीय अनुभव के आधार पर इस पुस्तिका के द्वारा कण्वाश्रम के बारे में कुछ शूक्ष्म जानकारी आप सब के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। एक विषय जो स्कूल में मुझे सबसे नापसंद था, वो था इतिहास और उसके कई कारण थे। समय तथा परिस्थितियों के साथ सब कुछ बदल जाता है और मेरी देश के इतिहास में रुचि जागृत हुई, और आज मैं इस देश के पौराणिक इतिहास का कुछ महत्वपूर्ण अंश आप लोगों के समक्ष रख रहा हूँ। कण्वाश्रम मेरे गाँव के बहुत करीब है। अत: उस के बारे में मुझे हमेशा से जिज्ञासा रही क्योंकि छुट्टी बिताने तो गांव में आना ही पड़ता था। चाहे स्कूल से या नौकरी के समय ज्यादातर लम्बी छुट्टियां गर्मियों के मौसम में ही मिलती थी। गांव में आने के बाद समय बिताने के दो ही विकल्प थे, या तो बगीचे में बैठकर भर पेट आम खा कर आराम करना या दूसरे विकल्प के तहत चौकीघाट में मालिनी नदी में दिन भर नहाते रहना। चौकीघाट में मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम या भरत स्मारक की साल दर साल मैंने स्थिति एक जैसी देखी और मुझे वहाँ कोई बदलाव नजर नही आया जैसे कि वहाँ समय ठहर सा गया हो। वैसे भी इसमें कोई दो राय नही है कि बम्बई, दिल्ली जैसे बड़े शहरों की अपेक्षा भाबर, कोटद्वार जहाँ मेरा निवास है, समय रुका हुआ ही लगता है। हम चाहे इसे अच्छा समझें या बुरा यह अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। चौकीघाट में कण्वाश्रम या भरत स्मारक जिसका शिलान्यास 1956 को हुआ था में कुछ बदलाव नही आया। हाँ बसन्त पंचमी पर वहाँ मेला जरूर लगता था, यह मुझे ज्ञात था। मेला मैंने कभी देखा नही था, क्योंकि मेला तो बसन्त

स्व0 श्री कुंवर सिंह नेगी 'कर्मठ' तथा लेखक

पंचमी में लगता था और मैं छुट्टी हमेशा गर्मियों में आता था।

परिस्थितियाँ बदली और मैं भारतीय नौसेना से सेवानिवृत होकर दिसम्बर 1992 में अपने परिवार के साथ अपने गांव मानपुर, कलालघाटी में रहने आ गया। घर के काम-काज जो खेती से सम्बन्धित थे तथा माता-पिता की सेवा में समय बीतने लगा पर कण्वाश्रम को एक राष्ट्रीय पहचान दिलाने की लालसा जो मन में थी, प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी।

कण्वाश्रम के विकास और उत्थान के लिए गठित समिति के बारे में ज्ञात हुआ तो मैं समिति के सभी सदस्यों से मिला और स्थिति का जायजा लिया। सभी सदस्य मुझ से करीब 25 से 30 वर्ष उम्र में बड़े थे, ये 1997 की बात है। इन सब सदस्यों में श्री कुँवर सिंह नेगी "कर्मठ" तो उस समय शायद 86 वर्ष के रहे होंगे। कण्वाश्रम के प्रति मेरा उत्साह देख कर समिति के सदस्यों ने सर्व सहमति से मुझे समिति का अध्यक्ष पद का दायित्व सौंप दिया। ये उनका एक बड़ा फैसला था तथा मेरे लिए पहाड़ के समान चुनौती। 1998 में अध्यक्ष पद सम्भालने के बाद अभी 2014 तक यह दायित्व निभाता आ रहा हूँ। समिति के सहयोग तथा अपने प्रयत्न से मैंने कण्वाश्रम को भारत के मानचित्र में लाने की कोशिश कर रहा हूँ जो आज भी जारी है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर मैं कण्वाश्रम पर एक संक्षिप्त पुस्तक लिख रहा हूँ। हम कुछ कदम आगे जरूर बढ़े पर पिछले 16 वर्षों में वो नही हो सका जिस कण्वाश्रम की मैने कल्पना की थी।

उत्तराखण्ड की राजनीतिक अस्थिरता कुछ हद तक इस के लिए जिम्मेदार है तथा कुछ कमी हमारी भी है। पर ऐसा महसूस हो रहा है कि परिवर्तन की बयार बह रही है। नालन्दा विश्वविद्यालय तथा अन्य सांस्कृतिक तथा शैक्षिक धरोहर को भारत सरकार द्वारा पुन: स्थापित किया जा रहा है तो आशा की एक किरण जागी है कि भविष्य में कण्व महर्षि के इस विश्वविद्यालय की स्थापना की ओर भारत सरकार ध्यान देगी। एक बार फिर स्वतंत्र भारत में चक्रवर्ती सम्राट भरत की जन्म स्थली इस देश के मानचित्र

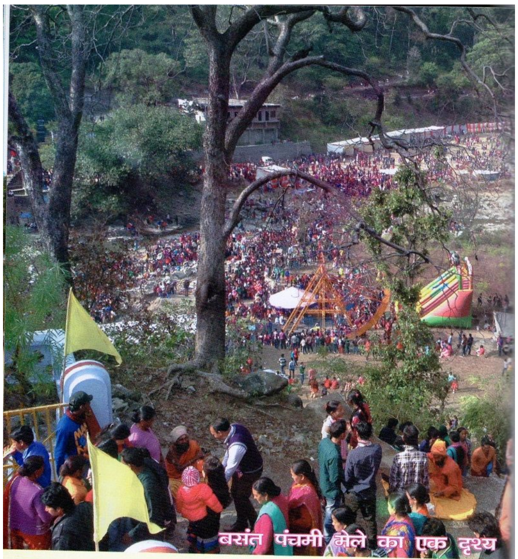
बसंत पंचमी मेले का एक दृश्य

पर उभर कर आयेगी तथा देश वासियों को इस बात का एहसास होगा कि वे चक्रवर्ती सम्राट भरत की संतान हैं। तब तक कण्व आश्रम विकास समिति के तथा मेरे प्रयास जारी हैं कि भरत की जन्म स्थली को इस देश में एक पहचान मिले, पर समय ही निर्धारित करेगा कि हम अपने इस उद्देश्य में कितने सफल हुए हैं।

ले० कमाण्डर वीरेन्द्र सिह रावत (से०नि०)
भारतीय नौसेना

कण्वाश्रम का स्वरूप

मालिनी नदी के तट पर स्थित ''कण्वाश्रम'' या कण्व के आश्रम के गौरवमय इतिहास से हमारे देश का क्या संबंध हो सकता है ये जानकारी वर्तमान समय में विद्वानों, बुद्धिजीवी को हो या आप सब में से कुछ को, जो भारतीय इतिहास या संस्कृति में रुचि रखते हैं तक ही सीमित हो। इस बात का हम सबको ज्ञान है कि जिस महान देश के हम नागरिक हैं उस देश को ''भारत'' या ''भारतवर्ष'' के नाम से जाना जाता है। क्यों? शायद ये भी हमारे संज्ञान में हो कि इस देश का नाम उस चक्रवर्ती सम्राट ''भरत'' के नाम से पड़ा जिसने इस विशाल भूखण्ड को एक राष्ट्र के रूप में एकीकृत कर इस पर कई वर्षो तक राज्य किया। इस महान राज्य की उत्पति तथा उस के हजारों वर्षों के स्वर्णिम युग से आज तक बहुत समय बीत चुका है। मालिनी नदी पूर्ववत की तरह आज भी प्रवाहमान है, पर नही है उसके तट पर वह विश्व विख्यात आध्यात्मिक तथा ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र, एक आदर्श महाविद्यालय जहाँ पर दस सहस्र विद्यार्थी कुलपति कण्व के अधीन शिक्षा ग्रहण करते थे। यह स्थान ऋषि मुनियों की तप स्थली भी था जहाँ वे साधना में लीन मोक्ष की प्राप्ति के लिए कठोर तप करते थे। ग्रन्थों के अध्ययन से ये निष्कर्ष तो निकाला जा सकता है कि कण्वाश्रम मालिनी घाटी के एक बड़े विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ होगा

हमारे देश ''भारतवर्ष'' की सभ्यता बहुत ही प्राचीन है। उसका इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना कि कण्वाश्रम का है। कण्वाश्रम इस देश की सभ्यता में एक दीप की लौ के समान है जिसने इस सम्पूर्ण देश को ज्ञान की ज्योति प्रदान की है। वर्तमान में मालिनी नदी के तट पर उस काल का कोई भौतिक अवशेष मौजूद नही है जो कण्वाश्रम के अस्तित्व को बल प्रदान करते हों। इसका एक कारण ये भी है कि भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र में कोई उत्खनन का कार्य नही किया गया है। यद्यपि इस क्षेत्र में कई स्थानों पर मूर्तियाँ, शिलालेख, स्तम्भ तथा भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं।

भौतिक तथ्यों को छोड़ अगर हम अन्य तथ्यों को संज्ञान में ले तो भी कण्वाश्रम के अस्तित्व को नकारा नही जा सकता क्योंकि इस देश के सभी ग्रन्थों में मालिनी नदी तथा कण्वाश्रम का वर्णन अनेकों प्रसंगों में किया गया है जो कि भौतिक अवशेषों से भी ज्यादा ठोस प्रमाण है।

धार्मिक दृष्टि से भी कण्वाश्रम एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था और उसकी तुलना बद्रीनाथ तथा केदारनाथ धाम से की जाती थी जो कि पुराणों में वर्णित है:-

ततः कण्वाश्रम गत्वा बद्रीनाथ क्षेत्र के ततः।
तेपेषु सर्वेषु स्नानचैव यथा विधि॥
ततः केदार भवनम्गच्छे पापानु पतये केदारनाथ।
शस भमूजय गृहतयाज्ञा ततः सिद्ध कार्य बद्रीकेशाय दर्शनम शुभदायक॥

अर्थात : सभी मनुष्यों को बद्रीनाथ क्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व कण्वाश्रम में जाकर वहाँ विधि पूर्वक स्नान कर केदारनाथ जाना चाहिए तथा वहाँ दर्शन करने के उपरान्त बद्रीनाथ के दर्शन करने चाहिए।

शिलालेख का अवलोकन करते समिति के सदस्य

इस पौराणिक कथन से कण्वाश्रम का महत्व उजागर होता है। पर समय के साथ क्षेत्र का परिदृश्य बदल गया है। जो तीर्थ यात्रा पहले कण्वाश्रम – व्यासघाट से होकर बद्रीनाथ तथा केदारनाथ जाती थी, वो आज हरिद्वार – ऋषिकेष से होकर जाती है। पहले जहाँ यह तीर्थ यात्रा श्रद्धालुओं द्वारा पैदल या खच्चरों, घोड़ों पर की जाती थी वो आज कारों तथा हैलीकाप्टर से सम्पन्न की जा रही है। सभ्यताओं का बनना तथा ध्वस्त होने का एक मुख्य कारण नये मार्गों का बनना और उसके कारण पुराने रास्तों से यात्रियों का विमुख होना है। नदियों का विमुख होना भी सभ्यताओं के विघटन का एक अन्य कारण है। सरस्वती नदी के तटों पर स्थित वैदिक सभ्यता का विघटन सरस्वती नदी के विलुप्त होने से ही हुआ था। पर सौभाग्यवश कण्वाश्रम को आते–जाते रास्ते तो बदल गयें पर मालिनी ने कण्वाश्रम का साथ अन्त तक निभाया और आज भी अपनी मंद गति से प्रवाहमान है और अपने अमृत रूपी जल से इस क्षेत्र के समस्त निवासियों को पीने के लिए पानी तथा खेतों के लिए सिंचाई का पानी दे कर जीवन प्रदान कर रही है।

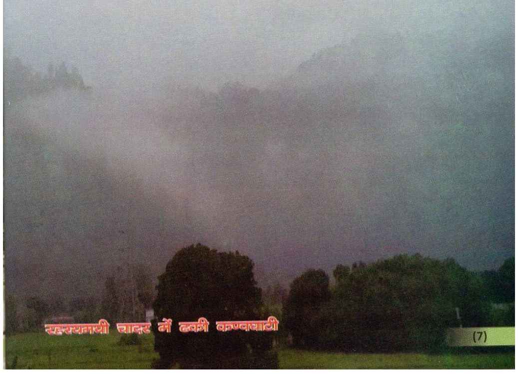

रहस्यमयी चादर में ढकी कण्वघाटी

कण्वाश्रम के ऐतिहासिक तथ्य

कण्वाश्रम का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि इस देश का या विश्व का इतिहास। पुरातत्व विशेषज्ञों तथा मानवशास्त्रियों द्वारा जीवाश्मों के अवशेष के अध्ययन के आधार पर ये निष्कर्ष निकाला है कि मनुष्य की उत्पति अफ्रीका महाद्वीप में हुई थी। किन्तु ये भी सत्य है कि उस मानव का सांस्कृतिक तथा सामाजिक उत्थान इस भूखण्ड में हुआ था जिसे आज भारतवर्ष कहते है। मालिनी के तट पर स्थित "कण्वाश्रम" का वर्णन भारत के प्राचीन ग्रन्थों में, पुराणों, महर्षि व्यास द्वारा रचित महाभारत तथा महाकवि कालीदास की रचनाओं में जीवन्त मिलता है। स्कन्ध पुराण के केदार खण्ड के 57 वें अध्याय में कण्वाश्रम का वर्णन इस प्रकार दिया गया है:-

कण्वाश्रम समारमभ यावननंद गिरिभवेत।
तावत क्षेत्र परमं मुक्ति - मुक्ति परदायकः॥
कणवो नाम महातेज महर्षि लोक विश्रुतः।
तस्या श्रम पदे भगवत रमापतिम्॥

अर्थात : जो कण्वाश्रम यहाँ से नन्दगिरि पर्वत तक विस्तृत है वह एक परम पुण्य स्थान है तथा भक्ति, योग तथा मोक्ष का केन्द्र है। वहाँ सम्पूर्ण लोक में विख्यात महातेजस्वी कण्व ऋषि का आश्रम है तथा जहाँ अपना शीष नमन कर सम्पूर्ण सुख और शान्ति प्राप्त होती है।

इस के अतिरिक्त इस देश के और विश्व के सबसे विशाल तथा प्राचीन ग्रन्थ "महाभारत" में भी कण्वाश्रम तथा मालिनी का कई जगह वर्णन किया गया है:

प्रस्थे हिमवतो रम्ये मालिनीममितो नदीम्।
जातमुत्सृज्यन्त गर्भ मेनका मलिनिमनुः॥

अर्थात : अत्यन्त ही सुन्दर हिमवत के अन्तिम प्रदेश है जहाँ कि

महर्षि कण्व ऋषि महाराज

पवित्र मालिनी के तट पर मालिनी अनुस्वरूप मेनका के गर्भ से उत्पन्न शकुन्तला ने एक शिशु को जन्म दिया है।

देशों और लोगों को लूटने की हीन भावना से त्रस्त ग्रीस (यूनान) देश का लुटेरा सिकन्दर जब सिन्धु नदी के तट पर पहुँचा और उसे तत्कालीन भारतवर्ष के सम्राट चन्द्र गुप्त मौर्य की विशाल सेना के बारे में जब पता चला तो उसने डर के मारे घर वापस जाने में ही अपनी भलाई समझी। उसके कुछ समय पश्चात पाटलिपुत्र में चंद्र गुप्त मौर्य के दरबार में ग्रीस (यूनान) से एक दूत आया जिसका नाम मैगस्थनीज था। वह कई वर्ष तक भारत में रहा तथा उसने अपने अनुभव के आधार पर "Indika" नामक एक पुस्तक लिखी। वर्तमान में यह पुस्तक तो मौजूद नही है पर उसको पढ़ने वाले कुछ लेखकों ने उस के आधार पर जो लिखा है वह आज भी मौजूद है। इस के अलावा एलेक्जेण्डर कनिंघम जो कि अंग्रेजो के काल में भारतीय पुरातत्व विभाग के मुखिया थे, ने भी अपनी 1865 में लिखी गयी एक रिपोर्ट में लिखा है कि जिस नदी को ग्रीक दूत मैगस्थिनीज ने अपनी पुस्तक में erineses के नाम से सम्बोधन किया है वो मालिनी नदी ही थी, जिस के तट पर शकुन्तला बड़ी हुई।

इन सब एतिहासिक तथ्यों के अलावा एक व्यक्ति जिस ने कण्वाश्रम की अदृष्ट और विलुप्त होती हुई पहचान को एक बार फिर उजागर कर सबके सम्मुख एक कलाकृति के रूप में प्रस्तुत किया और इसके लिए इस देश का प्रत्येक नागरिक उनका ऋणी है। समय की विभीषिका ने कण्वाश्रम के भौतिक अस्तित्व को तो समाप्त कर दिया पर अपनी लेखनी से हजारों वर्ष बाद भी कण्वआश्रम के सजीव चित्रण से महाकवि कालीदास, जिन्हें उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों का सम्पूर्ण ज्ञान था, ने अपनी अतिंम कृति ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' में समस्त कण्वाश्रम, मालिनी तथा उससे जुड़े सभी पात्रों को अमर बना दिया। मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला, राजा दुष्यन्त से शकुन्तला का गन्धर्व विवाह, उनके पुत्र भरत का जन्म इत्यादि, सभी को एक आलौकिक रूप देकर अपनी रचना में प्रस्तुत किया।

पवित्र मालिनी के तट पर मालिनी अनुस्वरूप मेनका के गर्भ से उत्पन्न शकुन्तला ने एक शिशु को जन्म दिया है।

देशों और लोगों को लूटने की हीन भावना से त्रस्त ग्रीस (यूनान) देश का लुटेरा सिकन्दर जब सिन्धु नदी के तट पर पहुँचा और उसे तत्कालीन भारतवर्ष के सम्राट चन्द्र गुप्त मौर्य की विशाल सेना के बारे में जब पता चला तो उसने डर के मारे घर वापस जाने में ही अपनी भलाई समझी। उसके कुछ समय पश्चात पाटलिपुत्र में चंद्र गुप्त मौर्य के दरबार में ग्रीस (यूनान) से एक दूत आया जिसका नाम मैगस्थनीज था। वह कई वर्ष तक भारत में रहा तथा उसने अपने अनुभव के आधार पर "Indika" नामक एक पुस्तक लिखी। वर्तमान में यह पुस्तक तो मौजूद नही है पर उसको पढ़ने वाले कुछ लेखकों ने उस के आधार पर जो लिखा है वह आज भी मौजूद है। इस के अलावा एलेक्जेण्डर कनिंघम जो कि अंग्रेजो के काल में भारतीय पुरातत्व विभाग के मुखिया थे, ने भी अपनी 1865 में लिखी गयी एक रिपोर्ट में लिखा है कि जिस नदी को ग्रीक दूत मैगस्थिनीज ने अपनी पुस्तक में erineses के नाम से सम्बोधन किया है वो मालिनी नदी ही थी, जिस के तट पर शकुन्तला बड़ी हुई।

इन सब एतिहासिक तथ्यों के अलावा एक व्यक्ति जिस ने कण्वाश्रम की अदृष्ट और विलुप्त होती हुई पहचान को एक बार फिर उजागर कर सबके सम्मुख एक कलाकृति के रूप में प्रस्तुत किया और इसके लिए इस देश का प्रत्येक नागरिक उनका ऋणी है। समय की विभीषिका ने कण्वाश्रम के भौतिक अस्तित्व को तो समाप्त कर दिया पर अपनी लेखनी से हजारों वर्ष बाद भी कण्वआश्रम के सजीव चित्रण से महाकवि कालीदास, जिन्हें उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों का सम्पूर्ण ज्ञान था, ने अपनी अतिंम कृति ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' में समस्त कण्वाश्रम, मालिनी तथा उससे जुड़े सभी पात्रों को अमर बना दिया। मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम, मेनका और विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला, राजा दुष्यन्त से शकुन्तला का गन्धर्व विवाह, उनके पुत्र भरत का जन्म इत्यादि, सभी को एक आलौकिक रूप देकर अपनी रचना में प्रस्तुत किया।

अगर हम वर्तमान में मौजूद तथ्यों को जोड़ें तो ये तो निश्चित है कि मालिनी के तटों के निकट एक बड़े भू-भाग पर कण्वाश्रम स्थित था। पर कण्वाश्रम कहाँ था? महाकवि कालीदास के कण्वाश्रम के अभिज्ञान शाकुन्तलम् में चित्रण से ये तो स्पष्ट है कि कण्वाश्रम उत्तराखण्ड में था। नाटक के प्रथम अंक में दुष्यन्त का सारथी राजा से कहता है कि :

''उद्धातनी भूमिरितिमयारशिमसयमनादरथस्य मंदीकृती वेग:''

महाराज ऊँची-नीची भूमि आने के कारण रास खींचने के कारण रथ की गति मंद हो गयी है। सम्भवत: राजा दुष्यन्त का रथ समतल भूमि से पहाड़ों के समीप पहुँच गया होगा। तत् पश्चात महाराज दुष्यन्त को आश्रम के निवासी मालिनी नदी के किनारे लकडी जमा करते मिलते हैं। पुछने पर वे कहते हैं कि मालिनी नदी के तट पर कण्व ऋषि का आश्रम दिखाई देता है।

''अनुमालिनीतीरे आश्रमों दृष्यते'' अभि०शा० प्रथम अंक

उत्तराखण्ड प्रदेश में जिला - पौड़ी गढ़वाल में कोटद्वार नाम के शहर के पश्चिम दिशा की ओर करीब 12 कि.मी. दूर भाबर के तराई क्षेत्र में चौकीघाट नामक स्थान से मालिनी नदी पहाड़ों से निकल कर समतल भूमि में प्रवेश करती है जहाँ उसके वेग में कमी आती है। पहले की तुलना में आज के समय मालिनी नदी के बहते हुए जल में अत्यधिक कमी आई है। इस के लिए कुछ हद तक 1970 के दशक में सरकार की गलत नीतियों के तहत मालिनी के क्षेत्र में जंगलों का कटना तथा वर्तमान में अन्य कारणों से विश्व के बढ़ते हुए तापमान को दोष दिया जा सकता है।

भारतीय इतिहासकारों तथा विद्वानों द्वारा लिखी गई इतिहास की पुस्तकों पर एक नजर डालें तो इन सब ने अपनी पुस्तकों के नाम ''प्राचीन भारत'', ''भारत का प्राचीन इतिहास'' आदि रखे हैं और इन सब पुस्तकों में इन लेखकों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि हम सब भरत की संतान है। विष्णु पुराण में हमें ऐसा वर्णन मिलता है:

''उत्तरं यत् समुद्रस्य, हेमाद्रेश्वैव दक्षिणम।
वर्षम् तद् भारतम् नाम, भारती यत्र सन्तति।।''

अर्थात: उत्तर में हिम से ढके पर्वतों के नीचे और महासागर के ऊपर में जो भू भाग है उसमें भरत के वंशज निवास करते हैं।

पर यह एक अत्यधिक आश्चर्य की बात है कि इन में से किसी भी इतिहासकार ने चक्रवर्ती सम्राट भरत की जन्म स्थली ''कण्वाश्रम'' का कहीं कोई वर्णन अपनी पुस्तकों में नही किया है और न ही सम्राट भरत के साम्राज्य का जो कि इस विशाल भूखण्ड में फैला हुआ था। स्वतन्त्रता के उपरान्त 1956 में भारत तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विद्वानों की राय के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँची कि कण्वाश्रम मालिनी नदी के तट पर स्थित था। इस के तहत चौकीघाट में एक स्मारक का निर्माण मालिनी के तट पर किया गया।

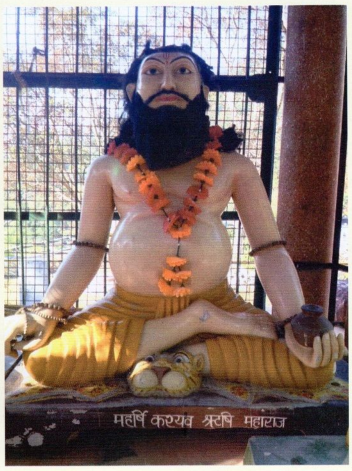

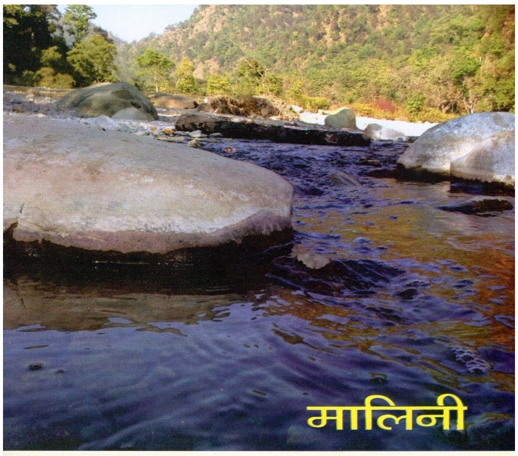

मालिनी

कण्वाश्रम के सम्बन्ध में अगर कोई चर्चा की जाए तो उसमें मालिनी नदी का उल्लेख जरूर होगा। मालिनी नदी का कण्वाश्रम से एक अटूट रिश्ता है। कण्वाश्रम की स्थापना और उसका अस्तित्व मालिनी नदी के कारण ही था क्योंकि उसमें कल-कल बहते हुए जीवनदायी शीतल, शुद्ध मीठे जल ने ही शायद कण्व महर्षि को आकर्षित कर अपने तट पर आश्रम की स्थापना करने पर मजबूर किया होगा। मालिनी के दोनों तटों पर उगे सघन वन और उसमें उपलब्ध अनेकों तरह के फल-फूल तथा जड़ी-बूटियों ने आश्रम के सभी निवासियों की जरूरतों को पूरा किया होगा।

हिमालय की अनन्त पर्वतीय श्रंखलाओं में शिवालिक पर्वत श्रेणियों में मल्या (चांडाखाल) नामक स्थान जो कि पौड़ी गढ़वाल के दुगड्डा विकास खण्ड में अजमेर पट्टी में मालिनी नदी का उद्गम स्थल है। पहाड़ों से निकली

अनेक छोटी धाराओं को अपने साथ लेकर पहाडों के बीच में से मालिनी, अपने उदगम स्थल से पश्चिम दिशा की ओर बहती है। करीब 8 से 10 कि. मी. के सफर में मालिनी मंणडाई, सौर, अमोली तथा कुछ अन्य गांवों को सींचते हुए, मरणखेत नामक स्थान से दक्षिण दिशा की ओर घूम जाती है। सिमलना मल्ला, तल्ला तथा अन्य गांवों को पीछे छोडते हुए मालिनी करीब 10 कि.मी. का और पहाड़ी रास्ता तय कर घाटी के बीच में से निकलते हुए चौकीघाट नामक स्थान पर समतल भूमि में प्रवेश करती है। यहाँ पर कण्वाश्रम का सांकेतिक स्मारक स्थित है। एक समय में चौकीघाट इस क्षेत्र की सम्पन्न मंडी होती थी और पहाड़ में निवास कर रहे लोग इस मंडी में आकर अपनी जरूरत का सामान खरीदते थे। यहाँ से एक अश्व मार्ग मालिनी नदी के साथ-साथ होता हुआ पहाड़ के अन्य गांवों को जोडता था। दो स्थान पर नदी पार जाने के लिए लोहे के पुल बने हैं। इनमें एक पुल जो कि चौकीघाट से करीब 4 कि.मी. पर है के लोहे के स्तम्भ पर 1887 की तिथि अंकित है। 1926 में मालिनी में बहुत भयंकर बाढ़ आयी और इस के कारण नदी के मार्ग में बसे चौकीघाट में बहुत तबाही हुई। सम्भवत: नदी के रास्ते में कहीं पहाड़ खिसकने से उसका रास्ता अवरुद्ध हो गया तथा इस अवरोध के टूटने से पानी का सैलाब अपने रास्ते में सब कुछ बहा ले गया। केदारनाथ धाम में 2012 में भी कुछ ऐसा ही हुआ था। समय के बदलाव के साथ कोटद्वार से पहाड़ के लिए नये रास्ते बन गये और चौकीघाट की मंडी अपनी इस दोहरी तबाही से कभी उभर नही पायी।

वर्षा में मालिनी का रौद्र रूप

चौकीघाट से मालिनी का वेग कम हो जाता है और उसका पाट चौड़ा हो जाता है। बरसात के मौसम में मालिनी में अत्यधिक पानी आता है जो कि अपने साथ पहाड़ों से लाल मिट्टी बहा कर लाता है। इस मिट्टी युक्त पानी की सिंचाई से भाबर की खेती की भूमि को हर साल एक नई ऊर्जा मिलती है। यह क्षेत्र एक समय में हंसराज बासमती, बिंदली तथा अन्य किस्मों की धान की फसलों के लिये विख्यात था किन्तु समय के साथ क्षेत्र में खेती में कमी तथा बदलाव भी आया है। मालिनी नदी में पूरे वर्ष पानी उपलब्ध रहता है जिसका ज्यादा अंश नहरों के माध्यम से सिंचाई के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसका कुछ अंश चौकीघाट तक पहुँचता है और तत्पश्चात भूमिगत हो जाता है।

चौकीघाट से चल कर मालिनी अपने तट पर बसे सबसे बड़े शहर नजीबाबाद को अपने बांई ओर छोड़कर आगे बढ़ते हुए अनेक गांवों को अपना जल प्रदान करती है। मालिनी के मार्ग में हरायापुर, लाखाखुरद, लालपुर, धर्मपुर भोज, महेश्वर इत्यादि गांव और कस्बे बसे हैं। अपने उद्गम स्थल मल्या से करीब 80 कि.मी. का रास्ता तय कर मालिनी उत्तर प्रदेश में रवाली नामक स्थान पर गंगा जी में समा जाती है।

मालिनी नदी का नाम सम्भवत: उसके तटीय सघन वनों में उगने वाली मालू या मालण नाम की एक बेल से आया हो जिसका इस क्षेत्र के ग्रामीण कई कार्यों में उपयोग करते हैं। इस बेल के पत्तों से पत्तल बनाये जाते है जो कि शादी तथा त्योहारों में मेहमानों को खाना परासने के काम आते हैं। इसके अलावा इस की बेल को रस्सी के रूप में उपयोग किया जाता है तथा इसकी छाल की रस्सी बनाई जाती है। यह भी संभव है कि इस बेल को औषधि बनाने में भी उपयोग किया जाता हो।

मालिनी नदी का उल्लेख हमारे सभी ग्रन्थों में किया गया है। अनेक विदेशी लेखकों ने अपनी पुस्तकों तथा आत्म कथाओं में भी मालिनी का वर्णन किया है। इसमें मुख्यत: यूनानी, चीनी तथा अंग्रेज हैं।

इस देश के इतिहास में कण्वाश्रम से सम्बंधित घटनाक्रम के समस्त पात्र जैसे मेनका, विश्वामित्र, शकुन्तला, दुष्यन्त के अतिरिक्त मालिनी नदी का उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है जितना कि अन्य पात्रों का। यद्यपि कण्वाश्रम से जुड़े सभी पात्र अब मौजूद नही है पर मालिनी नदी अभी भी प्रवाहमान है और सदैव रहेगी तथा कण्वाश्रम के अस्तित्व को सदैव जीवित रखेगी।

शकुन्तला

शकुन्तला

शकुन्तला का दुर्भाग्य ही था कि वह आजीवन अपने जैविक पिता महर्षि विश्वामित्र तथा माता अप्सरा मेनका के प्यार से वंचित रही। पर सौभाग्यवश नदी के तट पर माता-पिता द्वारा त्यागी बच्ची वहाँ से गुजर रहे कण्व महर्षि को मिल गयी। उनके द्वारा उसका पालन-पोषण किया गया तथा उसका नाम शकुन्तला रखा गया। ब्रहमचारी कण्व ने माता-पिता दोनों का दायित्व बहुत जिम्मेदारी से निभाया तथा उसे अच्छी शिक्षा-दीक्षा दी। शकुन्तला एक सुशील, सुसंस्कृत तथा शालीन कन्या बनी।

आज भी मालिनी नदी के तट पर स्थापित कण्वाश्रम से कुछ ही दूरी पर पहाड़ की पठार को "शौटिल्यधार" भी कहते है जो ये दर्शाता है कि ये क्षेत्र शकुन्तला तथा कण्वाश्रम से जुड़ा हुआ है। महाकवि कालीदास ने अपनी कृति का नाम "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" रख कर शकुन्तला को अपने नाटक का मुख्य पात्र बनाया है क्योंकि कण्व, दुष्यन्त, भरत इत्यादि शकुन्तला के कारण ही इतिहास में अपनी जगह बना पाये हैं। शकुन्तला के जैविक पिता विश्वामित्र जो इस इतिहास की पहली कड़ी है का आश्रम सम्भवत: कण्वाश्रम के आस-पास रहा होगा। कुछ का मत है कि विश्वामित्र सिद्ध आश्रम में रहते थे जो 'खो' नदी के किनारे था। उत्तराखण्ड का कोटद्वार शहर 'खो' नदी के किनारे बसा है। आज भी नदी के तट पर एक मंदिर है जिसे सिद्धबली मंदिर कहते है।

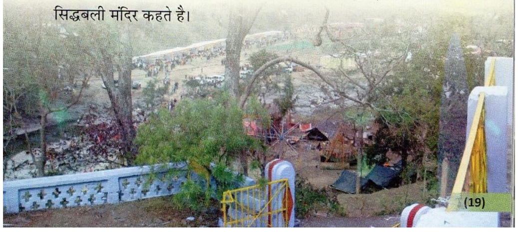

महाराजा दुष्यन्त

राजा दुष्यन्त

इलनकी और रथवन्तरी के पाँच पुत्रों में से दुष्यन्त सबसे बड़े थे और अपने पिता की मृत्यु के बाद राजा के पद पर आसीन हुए। उनके राज्य की राजधानी कहाँ थी तथा उनका राज्यकाल कितने वर्षों का था के बारे में इतिहास में कोई जानकारी नही है। वर्तमान तथ्यों के आधार पर इतना तो विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दुष्यन्त का राज्य सम्पूर्ण उत्तर भारत में रहा होगा और उसकी राजधानी हस्तिनापुर के आस-पास रही होगी। कुछ लेखकों के द्वारा दुष्यन्त के राज्य की राजधानी हस्तिनापुर बताया गया है जिसको विद्वानों ने गलत बताया है क्यों कि हस्तिनापुर को राजा हस्ती ने बसाया था जो दुष्यन्त के पुत्र भरत के पड़ पोते थे। ये भी सम्भव है कि दुष्यन्त की राजधानी हस्तिनापुर ही रही हो पर उसका नाम कुछ और रहा हो तथा राजा हस्ती ने उस शहर का नाम बदलकर हस्तिनापुर रख दिया हो। महाभारत के अनुसार राजा दुष्यन्त शस्त्रों में निपुण एक काबिल और बलवान शासक थे तथा उनकी प्रजा उनका अत्यधिक सम्मान करती थी। उनके राज्य में नागरिक भय मुक्त रह कर धर्म का पालन करते थे।

राजाओं के अनेक मनोरंजन के साधन होते हैं तथा इनमें शायद जंगली जानवरों का शिकार करना सभी का प्रिय था। ऐसे ही एक शिकार पर निकले राजा दुष्यन्त अपनी राज्य की सीमा के सघन वन में जाते हैं। शिकार का पीछा करते-करते वे वन को पार कर एक मनोहर उपवन में पहुँच जाते हैं। वहाँ पर मालिनी नदी के तट के किनारे सूखी लकड़ी जमा करते हुए कुछ लोग राजा दुष्यन्त को दिखते हैं। उनसे प्रश्न करने पर वे कहते हैं कि आगे पहाड़ों के पास मालिनी नदी के तट पर कुलपति कण्व ऋषि का आश्रम दिखाई देता है। ''अनुमालिनीतीरे आश्रमों दृष्यते'' अभि0शा0 प्रथम अंक, और जिज्ञासा वश दुष्यन्त आश्रम में प्रवेश करते हैं। अन्य कथाकारों के अनुसार राजा दुष्यन्त कुलपति कण्व से शिष्टाचार भेंट करने उनके आश्रम में गये थे क्योंकि वो

उनकी राज्य की सीमा के अन्दर था। एक अन्य के अनुसार राजा के बाण से घायल हिरन आश्रम में आता है तथा जब शकुन्तला उसके घाव का उपचार कर रही थी तभी राजा भी उसका पीछा करते हुए वहाँ पहुँच जाते हैं। राजा दुष्यन्त का कण्वाश्रम में प्रवेश का वर्णन लेखकों द्वारा अलग-अलग तरह से किया गया है जिसमें महाकवि कालीदास भी हैं। इन सब कथाओं का अन्ततः अन्त एक ही है कि राजा दुष्यन्त की भेंट शकुन्तला से हो जाती है।

आश्रम में प्रवेश करने पर राजा दुष्यन्त का सम्मानपूर्वक स्वागत शकुन्तला द्वारा किया जाता है क्योंकि उस समय कुलपति कण्वाश्रम में मौजूद नही थे। अतिथि सत्कार तथा औपचारिक संवाद के बाद राजा दुष्यन्त शकुन्तला से प्रश्न करते हैं कि "आप कौन हैं तथा इस आश्रम में क्या कर रही हो?" इस पर शकुन्तला उत्तर देती है कि "मैं कुलपति कण्व की पुत्री हूँ तथा मेरे पिता आश्रम में मौजूद नही हैं और इस समय किसी कार्य से बाहर गये हुए है और शीघ्र लौटने वाले हैं।" वो राजा से निवेदन करती है कि कुछ देर उनकी प्रतीक्षा कीजिए। राजा को शकुन्तला की बातों से बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होने कहा की कुलपति कण्व तो अखण्ड ब्रहमचारी हैं तो ऐसे में आप उनकी पुत्री कैसे हो सकती हो? इस पर शकुन्तला ने अपने जन्म के सम्बन्ध के बारे में राजा दुष्यन्त को जानकारी दी कि उनके पिता कण्व ने उन्हे बताया है कि महर्षि विश्वामित्र की कठोर तपस्या से इन्द्र देवता अत्यधिक विचलित हो जाते हैं और उनकी तपस्या में विघ्न डालने के उद्देश्य से अप्सरा मेनका को धरती पर भेजते हैं। उन दोनों के संयोग से मेरा जन्म हुआ । मेरी माता मुझे तत्पश्चात वन में छोड़कर देवलोक में चली गयी। सौभाग्यवश वन में गुजरते हुए महर्षि कण्व की दृष्टि मुझ पर पड़ी और वह मुझे उठा कर आश्रम में ले आये तथा मेरा पालन-पोषण किया। शारीरिक जनक, प्राणों का रक्षक तथा अन्नदाता तीनों ही लोग पिता समान होते हैं। इसलिए कुलपति कण्व मेरे पिता हैं।

शकुन्तला के विचार, आचरण और सौन्दर्य से प्रभावित राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला को अपनी पत्नी बनने का अनुरोध किया तथा कहा कि वो उससे

गन्धर्व विवाह कर ले। शकुन्तला ने राजा से प्रतीक्षा कर अपने पिता के आने का इन्तजार करने को कह राजा के पुनः अनुरोध करने पर उनसे विवाह करने की सहमति दे दी। किन्तु उससे पूर्व शकुन्तला ने राजा दुष्यन्त से प्रतिज्ञा ली कि उनका जो पुत्र उत्पन्न होगा वह ही उनका उत्तराधिकारी होगा और इस देश का सम्राट बनेगा। राजा ने बिना सोचे समझे शकुन्तला की बात स्वीकार कर ली और गन्धर्व विधि द्वारा शकुन्तला से पाणिग्रहण किया। आश्रम में कुछ समय बिताने के उपरान्त राजा दुष्यन्त ने लौटने से पहले शकुन्तला को विश्वास दिलाया कि वह उसे लेने के लिए अपनी चतुरंगिणी सेना भेजेंगे। आश्वासन देने के पश्चात दुष्यन्त अपनी राजधानी को प्रस्थान कर गये, पर महाकवि कालीदास की रचना के अनुसार राजा दुष्यन्त शकुन्तला को अपनी एक राजसी अंगूठी यादगार के रूप में दे गये।

कुलपति कण्व तब आश्रम में वापस आये तो उन्हे सब बातों का ज्ञान हुआ तो उन्होने शकुन्तला से कहा कि जो गन्धर्व विवाह उसने किया है वह धर्म के अनुसार है। क्षत्रियों में गन्धर्व विवाह को श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अतिरिक्त राजा दुष्यन्त एक उदार तथा धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति हैं।

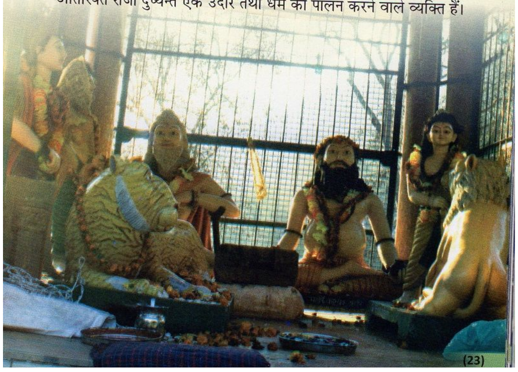

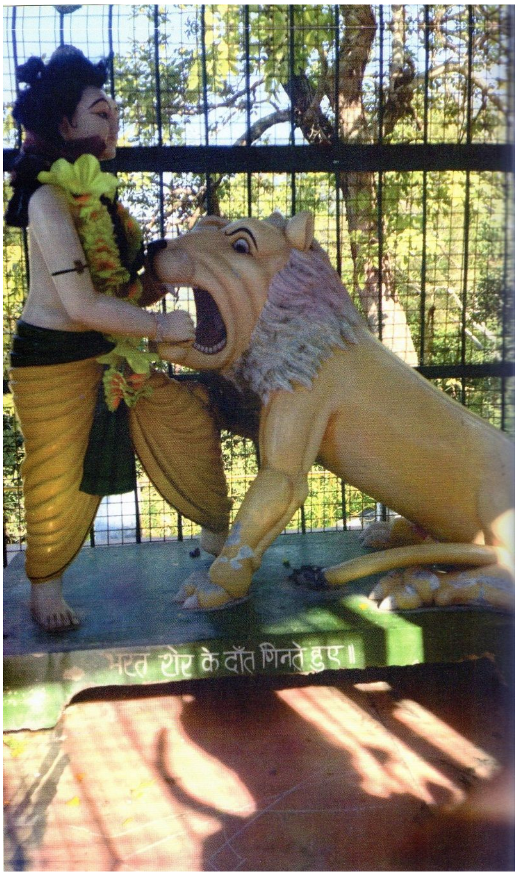
भरत शेर के दाँत गिनते हुए।

भरत

भरत ने इस विशाल भूखण्ड को एकीकृत कर एक महान राज्य की स्थापना की। उसका जन्म दुष्यन्त तथा शकुन्तला के पाणिग्रहण से ''कण्वाश्रम'' में हुआ। जन्म से ही इस बालक ने अपनी प्रतिभा से सब को प्रभावित किया। यह बालक बहुत ही विक्रमी तथा बलवान था। वह जंगली जानवरों तथा शेर इत्यादि से खेलता था। उन्हे पेड़ों से बांधकर उनके दांत गिनता था और उनका दमन करता था। इस कारण आश्रम वासियों ने उसका नाम सर्वदमन रख दिया।

''प्रस्थे हिमवतो रम्ये मालिनीमामितो नदीम्।
जातमुतसृज्यनतं गर्भ मेनका मलिनिमनु:।।
अस्तवयं सर्वदमन: सर्वहि दमयत्सौ।
स: सर्व दमनों नाथ कुमार सम्पदधत:।।

अर्थात : अत्यन्त सुन्दर हिमवत के अन्तिम प्रदेश में मालिनी नदी के तट पर मालिनी के अनुरूप मेनका के गर्भ से उत्पन्न शकुन्तला ने एक शिशु को जन्म दिया है। क्योंकि ये बालक सब का दमन करता है इसलिए आश्रम वासियों ने उसका नाम सर्वदमन रखा है।

शकुन्तला के पुत्र की अनेक योग्यतायें देखकर महर्षि कण्व ने यह निश्चय लिया कि वो युवराज होने योग्य है और उसका पालन-पोषण अब राजा दुष्यन्त की देख-रेख में महल में होना चाहिये ताकि वो राज्य के राज-काज सीख सके। महर्षि कण्व के आदेश के अनुसार शकुन्तला अपने पुत्र और आश्रम के कुछ साधु-सन्तों तथा निवासियों के साथ राजा दुष्यन्त के महल के लिए प्रस्थान करती है।

शकुन्तला का अपने पुत्र के साथ राजा दुष्यन्त से मिलना और अन्तत: राजा का उनको स्वीकार करना तथा अपने पुत्र को युवराज घोषित करने के कई रचनात्मक वर्णन हैं। इस सभी प्रसंगों में सबसे रोचक वर्णन

महाकवि कालीदास ने अपनी रचना ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' में किया है। इस रोचक कृति के अनुसार राजा दुष्यन्त की प्रतीक्षा और उनकी यादों में खोई शकुन्तला अपने आश्रम में आये दुर्वाषा ऋषि का स्वागत नही करती। इस से क्रोधित दुर्वाषा ऋषि शकुन्तला को श्राप देते हैं कि जिस की याद में खोई होने के कारण तूने मेरा स्वागत नही किया है वो व्यक्ति तुझे भूल जाएगा। इस श्राप से सब आश्रमवासी सहम जाते हैं और दुर्वाषा ऋषि से क्षमा मांगते हैं। शकुन्तला भी अपनी गलती मान क्षमा याचना करती है। दुर्वाषा कहते हैं कि ऋषि का श्राप तो वापस नही लिया जा सकता पर उसका असर या सीमा कम की जा सकती है। अगर तुम उस व्यक्ति को कोई पहचान की वस्तु दिखाओगे तो वो तुम्हे पहचान जाएगा।

अपने पुत्र को उसका हक दिलाने के लिए शकुन्तला कुछ आश्रम वासियों के साथ कुलपति कण्व का आशीर्वाद लेकर अपने पति राजा दुष्यन्त से मिलने के लिए आश्रम से प्रस्थान करती है। रास्ते में गंगा नदी को पार करने के लिए सब एक नाव में सवार होते हैं। नाव में सवार शकुन्तला नदी के पानी में अपना हाथ डाल जल क्रीड़ा करती है। दुर्भाग्यवश उस दौरान उसकी उंगली से राजा की दी हुई अंगूठी निकल कर पानी में गिर जाती है। राजा दुष्यन्त की राजधानी पहुँच कर शकुन्तला अपने पुत्र के साथ राजा के महल में उनसे मिलने जाती है और उनसे कहती है कि हे राजन! आपने मेरे साथ गन्धर्व विवाह किया है। मेरे साथ में यह बालक आपका पुत्र है, और आपके दिये हुए वचन के अनुसार आप इसे अपनी शरण में ले लीजिये और इसे अपने राज्य का युवराज घोषित कीजिये।

दुर्वाषा ऋषि के श्राप के कारण राजा दुष्यन्त को कुछ भी याद नही रहता और वह शकुन्तला को अपने विवाह की कोई निशानी दिखाने को कहते हैं। शकुन्तला जब अपना हाथ देखती है तो उसमें राजा की दी हुई अंगूठी नही होती। इस से शकुन्तला को सब के सामने लज्जित होना पड़ता है *और वह राज्य सभा को छोड़कर* अपने पुत्र के साथ वापस कण्वाश्रम आ जाती है। महाकवि कालीदास की रचना के अनुसार गंगा नदी में एक बड़ी मछली पकड़ने के बाद जब एक मछुवारा उसे काटता है तो उसके पेट में उसे सोने

की अंगूठी मिलती है। अपने साथियों से पूछने पर उसे पता लगा कि वो अंगूठी तो राजा की है। इस बात का पता वहाँ पर मौजूद राजा के सिपाहियों को लगता है तो वे उसे पकड़कर राजा दुष्यन्त के पास ले जाते हैं। राजा जब उस अंगूठी को देखते हैं तो उन्हे सब कुछ याद आ जाता है और राजा मछुवारे को बहुत सा ईनाम देकर विदा करते हैं।

अपनी स्मृति वापस आने पर राजा को बहुत ग्लानि होती है और वो अपनी सेना के साथ शकुन्तला की खोज में निकल पड़ता है। कण्वाश्रम के पास पहुँचने पर राजा को एक बालक दिखाई देता है जो कि एक शेर का मुंह खोलकर उसके दांत गिन रहा था। राजा के पूछने पर वो कहता है कि वह शकुन्तला का पुत्र है और राजा को कण्वाश्रम ले जाता है। जहाँ राजा दुष्यन्त का शकुन्तला से मिलन होता है। राजा दुष्यन्त अपनी पत्नी शकुन्तला और पुत्र के साथ वापस अपनी राजधानी आ जाते हैं और अपने पुत्र को युवराज घोषित करते है। दुष्यन्त-शकुन्तला के इस पुत्र को "भरत" के नाम से जाना गया। भरत ने इस विशाल भूखण्ड को एकीकृत कर कई वर्षों तक राज किया और इस चक्रवर्ती सम्राट के नाम से हमारे देश का नाम "भारतवर्ष" पड़ा।

राजा के शकुन्तला से मिलन, गन्धर्व विवाह, बिछड़ना तथा फिर मिलने की और कई कथायें भी हैं। महाभारत के अनुसार जब शकुन्तला अपने पुत्र के साथ राजा दुष्यन्त के दरबार में उनको अपना दिया हुआ वचन याद दिलाती है तो राजा उसे बहुत बुरा-भला कह कर अपमानित करते हैं।

शकुन्तला अपनी बात समझाती रही पर सभा में उपस्थित अन्य दरबारी भी उसका तिरस्कार करते हैं। अत्यन्त दुखी मन से शकुन्तला अपने पुत्र के साथ राजा के दरबार से चल पड़ती है। उसी समय आकाशवाणी होती है – ''राजन तुम शकुन्तला का अपमान मत करो तथा जो वह कह रही है वो सत्य है और तुम राजा दुष्यन्त ही इस बालक के पिता हो। तुम्हारे द्वारा भरण पोषण के कारण ही इस बालक का नाम ''भरत'' होगा।'' राजा दुष्यन्त तब सभी दरबारियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि ''मैं तो जानता था कि ये मेरा पुत्र है पर शकुन्तला के कहने पर उसे अगर मैं स्वीकार करता तो सारी प्रजा मुझ पर संदेह करती और इस उद्देश्य से प्रेरित होकर मैने शकुन्तला से ऐसा व्यवहार किया''। फिर राजा शकुन्तला को रानी तथा अपने पुत्र को युवराज के रूप में स्वीकार करते हैं।

दुष्यन्त के बाद भरत का उनका सिंहासन मिला तथा उन्होने इस भूखण्ड के सभी राजाओं को पराजित कर एक विशाल राज्य की स्थापना की। भरत ने अनेक यज्ञ करवाये तथा उनके नाम से ही इस देश का नाम ''भारतवर्ष'' पड़ा। भरत के वंशजों ने ही महाभारत का युद्ध लड़ा। भरत के पुत्र भमन्य हुए और उनके पुत्र सुहोत्र और सुहोत्रा के पुत्र थे हस्ती जिन्होने हस्तिनापुर बसाया।

पर ये एक बहुत अजीब विडम्बना है कि इस देश के इतिहासकारों ने इस देश के जनक चक्रवर्ती सम्राट भरत को अपनी लेखनी से उतना महत्व नही दिया जितना उन्हे मिलना चाहिए था। उनके राज्य के बारे में कोई जानकारी नही है, ना ही हमें ये मालूम है कि उनके राज्य की राजधानी कहाँ थी और उसका क्या नाम था। हमें इतना भी नही पता है कि भरत का जन्म कब हुआ था और उनकी मृत्यु कब हुई थी? उनके राज्य की सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थिति क्या थी तथा उनके राज्य की सीमायें कहाँ तक थी। महाभारत का युद्ध करने वाले सभी भरत के वंशज थे जो भरत से अठ्ठारह पीढ़ी बाद पैदा हुए थे। महाभारत के युद्ध की तिथि के बारे में भी अनेक मत हैं पर ये युद्ध लगभग 1000 से 1200 ईसा पूर्व लड़ा गया था। इसके अनुसार भरत का जन्म आज से करीब 3500 से 4000 वर्ष पूर्व हुआ था।

कण्वाश्रम का विघटन

किसी भी सभ्यता, शहर, देश इत्यादि का अस्तित्व अनन्त नही होता। समय के उत्थान पतन के कारण महान सभ्यतायें, शहर आदि अतीत के गर्भ में समा जाते है। जो आज चरम पर दिख रहा है वो कब शत विकसित हो जाये किसी को ज्ञात नही है। कण्वाश्रम का भी कभी शुभ आरम्भ हुआ था। समय के साथ वहाँ कई कीर्तिमान स्थापित किये गये। इस राष्ट्र के कई विद्यार्थियों ने वहाँ शिक्षा ग्रहण कर शिक्षित हुए। कण्वाश्रम ने शिक्षा, विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में इस देश को दिशा प्रदान की। कण्व कोई एक व्यक्ति विशेष का नाम नही था अपितु ये एक उपाधि थी जो कि इस विशाल विश्वविद्यालय के कुलपति को मिलती थी। इन सब कण्व का अपना एक उप नाम था जिस से उन सब की एक अलग पहचान थी। या यह भी सम्भव है कि हर कुलपति के उपनाम होते थे तथा ''कण्व'' एक व्यक्ति विशेष का उपनाम था जो उस कुलपति की विशेषता दर्शाता था।

कण्वाश्रम के बारे में इतिहास की पुस्तकों में सीमित जानकारी है। इस से ये सुनिश्चित करना अत्यधिक कठिन है कि कण्वाश्रम कब से कब तक अस्तित्व में रहा होगा, और इस का विघटन कब हुआ। पर इतना तो निश्चित है कि चक्रवर्ती सम्राट भरत का जन्म कण्वाश्रम में हुआ था। उनके राज काल के समय कण्वाश्रम अस्तित्व में था। कण्वाश्रम की शिक्षा पदति को

इस देश की वैदिक शिक्षा पदति से जोड़ कर देखना चाहिए जो कि महाभारत के युद्ध के पहले इस देश में प्रचलित थी। वैदिक सभ्यता के पतन के साथ ही कण्वाश्रम का महत्व भी कम हो गया और उसकी प्रसिद्धि में भी कमी आयी होगी। सम्भवतः कण्वाश्रम का अस्तित्व तो रहा होगा क्योंकि बद्रीनाथ को जाने वाले तीर्थ यात्री कण्वाश्रम के रास्ते व्यासघाट से होते हुए देवप्रयाग से बद्रीनाथ जाते थे। इस प्राचीन मार्ग का उपयोग शायद कुछ साल पहले ही बन्द हुआ जब से वाहनों का उपयोग शुरू हुआ।

इस देश के इतिहास में कई उतार-चढाव आये हैं जिस में कुछ प्रत्यक्ष रूप से सेना द्वारा आक्रमण हुए और कुछ अप्रत्यक्ष रूप से धार्मिक आक्रमण। इस के तहत जब वैदिक संस्कृति पर हमला हुआ तो कण्वाश्रम भी इस से अछूता नही रहा। जब वेद, यज्ञ और वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध इस देश में बौद्ध आंदोलन हुआ तो वैदिक धर्म के इस केन्द्र को चुनौती देने बौद्ध भिक्षु कण्वाश्रम तक आये। कोटद्वार और नजीबाबाद के बीच चन्दनपुरा नामक स्थान के पास मोरध्वज को उन्होने अपना केन्द्र बनाया। कण्वाश्रम के विनाश के साथ ही इस देश के पतन की कहानी शुरू हुई। वैदिक सभ्यता अपने पर हुए आघात से उबर ही रही थी इस देश में एक के बाद एक अनेक विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा। मंगोल, तुर्क, मुगलों के आक्रमण और लूट-पाट ने इस देश की सभ्यता से जुड़े मठ, मंदिर, पुस्तकालय तथा अन्य संस्थाओं को ध्वस्त कर दिया। 1227 में इल्तुतमिश ने विजनौर के समीप मंडावर के रास्ते शिवालिक की पहाड़ियों में प्रवेश किया और वहाँ मौजूद दो हिन्दू राजाओं को पराजित कर पूरे क्षेत्र में लूट-पाट की। इन सब प्रहारों के कारण कण्वाश्रम और उस के आस-पास के क्षेत्रों को अत्यधिक क्षति हुई। यह आक्रमण विश्वविख्यात शिक्षा निकेतन के अस्तित्व को भूमिसंगत करने के पश्चात ही समाप्त हुआ। यहाँ हरी-भरी घाटी में कल-कल बहती मालिनी नदी, घनघोर जंगल और अतीत की यादों के सिवाय कुछ नही बचा। लोगों के इस क्षेत्र से पलायन के बाद इस क्षेत्र के घने जंगलों में डाकुओं ने अपना डेरा बना लिया। सुल्ताना डाकू और उसके गिरोह का इस क्षेत्र में एक छत्र अधिकार हो गया। 1932 में सुल्ताना डाकू की मौत के बाद दहशत कम होने पर लोग यहाँ आकर बसने लगे और कण्वाश्रम एक बार फिर इस देश के मानचित्र पर उभरने लगा।

कण्वाश्रम का पुनरुत्थान

यह एक दैविक चमत्कार ही था कि एकाएक जब 1955 में भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने चक्रवर्ती सम्राट भरत की जन्म स्थली कण्वाश्रम को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में विकसित करने में रुचि दिखाई। अगर इस श्रेय का कोई हकदार है तो वो हैं रूस देश के वासी। सुनने में शायद अजीब सा लगे पर ये बात कुछ सुनी सुनाई सी है। हो सकता है कि इसमें कुछ सच्चाई हो।

कई सौ सालों की गुलामी के बाद इस राष्ट्र ने आजादी की सांस ली। इस नये स्वतंत्र राष्ट्र के प्रथम प्रधानमंत्री 1955 में विदेश यात्रा में रूस गये। वहाँ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में अन्य कृतियों के अलावा रूसी कलाकारों ने ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' पर आधारित एक बैले नृत्य प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरान्त अपने देश में आये हुए विदेशी मेहमान से बातचीत में एक पत्रकार ने अपने अतिथि से पूछा कि ''अभिज्ञान

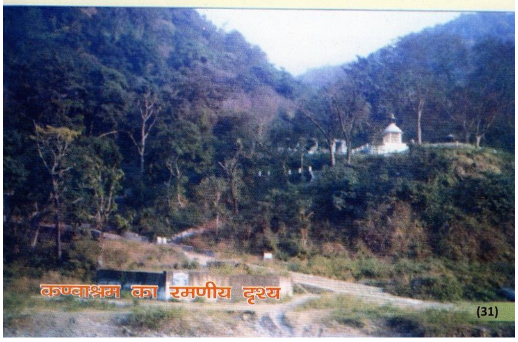

कण्वाश्रम का रमणीय दृश्य

महर्षि कण्व एवम् कश्यप की संगमरमर की 1956 में स्थापित मूर्तियां

शाकुन्तलम्'' में वर्णित ''कण्वाश्रम'' कहाँ है। पश्चिमी सभ्यता में रंगे हमारे प्रधानमंत्री को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नही थी। भारत लौटने के उपरान्त उनके द्वारा उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री सम्पूर्णानन्द को कण्वाश्रम को खोजने का दायित्व सौंपा। विद्वानों और इतिहासकारों से सम्पर्क किया गया तथा इस विषय पर चर्चा की गयी। प्राचीन ग्रन्थों, पुराणों, ऐतिहासिक तथ्य, पुरातत्व परिस्थितिकीय प्रमाणों तथा विद्वानों की तत्पर शोध के आधार पर निर्विवाद रूप से ये प्रमाणित हुआ कि उत्तर प्रदेश के जिला पौडी गढ़वाल में कोटद्वार शहर से करीब 12 किमी0 पश्चिम दिशा की तरफ बहती हुई मालिनी नदी के तट पर ही महाकवि कालीदास द्वारा अपनी कृति में वर्णित ''कण्वाश्रम'' स्थित रहा होगा।

अन्ततः उत्तर प्रदेश और केन्द्र सरकार की सहमति से उत्तर प्रदेश सरकार के तत्कालीन वन मंत्री जगमोहन सिंह नेगी के कर कमलों द्वारा

मालिनी नदी के पूर्वी तट पर चौकीघाट नामक स्थान पर एक सांकेतिक स्मारक का शिलान्यास पौष शुक्ल 1 प्रतिपाद संवत 2012 तदनुसार 1956 को हुआ जो कि कण्वाश्रम और भारतवर्ष की गरिमा के अनुरूप नही था। नदी के किनारे एक उठे हुए टीले नुमा क्षेत्र पर इस स्मारक का निर्माण किया गया। स्मारक में संगमरमर की पाँच मूर्तियाँ स्थापित की गयी। ये थी महर्षि कण्व, महर्षि कश्यप, दुष्यन्त, शकुन्तला तथा भरत जो एक सिंह का मुख खोलकर उसके दांत गिनता हुआ दर्शाया गया था। दुर्भाग्यवश आज परिसर में सिर्फ दो ही मूर्तियाँ कण्व और कश्यप की बची हैं बाकी को एक व्यक्ति ने खंडित कर दिया।

शिलान्यास के समय स्मारक में एक शिलापट्ट लगाया गया जिसमें जन मानस का आह्वान किया गया है:-

''मनसि यदि तव स्याज्जन्मना गर्वलेशो।
भरतभुवि रतिश्च प्रवक्तनायो समृद्धौ।।
विरम सुजन किश्चतपुण्य कण्वाश्रमेयिचमधा।
न्स्मर च भरत पितरों मालिनीकूलकेली:।।
तमोग्रस्तस्य विश्वस्य लरेक रश्मि प्रदर्शिका:।
वयमेव पुरश्भूम भूयस्तद्वम्दवामहे।।
पशुरेव न जानीयादाम्मनोश्तीत गौरवम्।
न यथा पश्व: स्यामस्तथा शश्वविद्यातातमहे।।
लोकस्य द्वेषमात्सय विग्रहाक्षित्पचेतस:।
विश्व मैत्री प्रतिष्ठायै पंचशीले श्यामहे।।''

अर्थात: यदि आप के मन में भरत भूमि में जन्म लेने का तथा इसकी प्राचीन समृद्धि के बारे में जरा भी गर्व है तो हे सज्जन पुरुष! कुछ समय के लिए तुम इस पवित्र मालिनी नदी के तट पर रुक कर कण्वाश्रम में भरत के पितरों का स्मरण करो जिन्होने इस सारे विश्व में ज्ञान की रोशनी पैदा कर

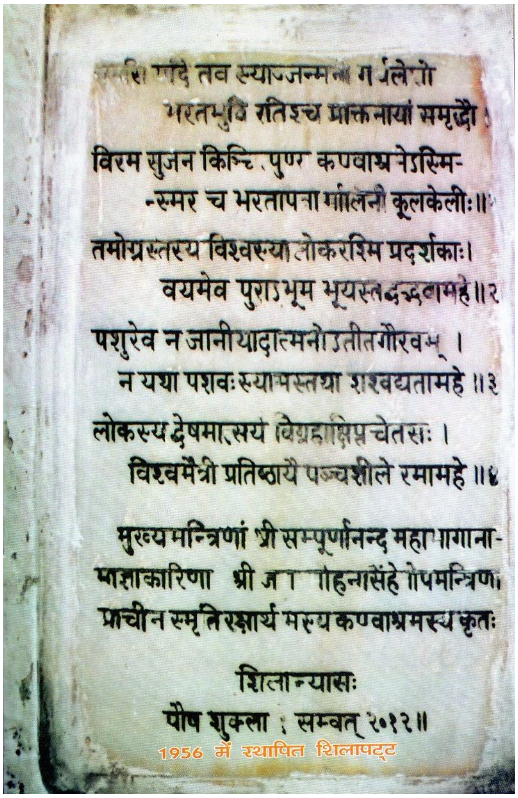

1956 में स्थापित शिलापट्ट

अज्ञान रूपी अंधकार को दूर किया। जिस प्रकार पशु को अपने अतीत के गौरव का ज्ञान नही है, हमें निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए कि हम उनके जैसे न बनें। संसार से द्वेष, बुराई और आपसी भेदभाव को मिटा कर विश्व मैत्री का सम्मान कर पंचशील का पालन करें।

स्मारक के शिलान्यास के बाद क्षेत्रीय ग्रामीणों द्वारा एक समिति का गठन किया गया और उसे ''कण्वाश्रम विकास समिति'' का नाम दिया गया। इस शिलान्यास के फलस्वरूप इस क्षेत्र में एक नई परम्परा का जन्म हुआ जिस के तहत हर साल बसन्त पंचमी में मालिनी नदी के तट पर चौकीघाट में मेले का आयोजन होने लगा। आजादी के बाद इस देश की आर्थिक दशा बहुत अच्छी न होने के कारण कण्वाश्रम के विकास पर और अधिक ध्यान नही दिया गया। हर वर्ष मेले के आयोजन के अलावा कण्वाश्रम में पर्यटन की दृष्टि से कोई पहल सरकार द्वारा नही की गयी।

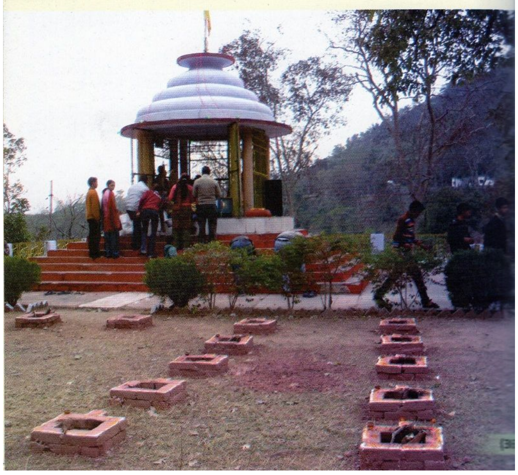

भरत स्मारक परिसर
कर्णवाश्रम विकास समिति
पंजीकृत सं.- 237/1991-92
स्वीकृत भू भाग - 0.64 हैक्टर
दूरभाष-०१३८२ २४२२१३ २४२२५२

कण्वाश्रम विकास समिति

1956 में स्मारक की स्थापना और शिलान्यास के साथ ही एक समिति का गठन किया गया। इस समिति में स्थानीय तथा कोटद्वार के कुछ सम्माननीय नागरिक थे। सरकार द्वारा शिलान्यास स्थल तथा उसके चारों तरफ की भूमि को समिति को लीज पर दे दिया और उस क्षेत्र की देख-रेख का दायित्व भी समिति को दे दिया गया।

अपने इस दायित्व को निभाते हुए समिति ने सुनियोजित तरीके से हर वर्ष बसन्त पंचमी के मेले का आयोजन करना शुरू कर दिया। कुछ समय उपरान्त जिला प्रशासन द्वारा मेले के आयोजन के लिए कुछ अनुदान राशि दी जाने लगी। इस के साथ ही सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा इस मेले में अपनी भागीदारी शुरू कर दी। पशु पालन, कृषि उद्यान, स्वास्थ्य जैसे विभागों ने मेले में अपने स्टॉल लगाकर ग्रामीणों को अपने विभाग से सम्बधित जानकारी देनी शुरू कर दी।

कण्वाश्रम विकास समिति में इस क्षेत्र के अनेक सम्मानित जन का योगदान रहा। इन सब में से एक, जिनकी कण्वाश्रम के विकास तथा प्रचार प्रसार में अहम भूमिका रही वो थे ललिता प्रसाद नैथानी जो पेशे से एक वकील थे और कुछ समय कोटद्वार नगर पालिका के अध्यक्ष भी रहे। एक और व्यक्ति जो कण्वाश्रम के प्रति आजीवन समर्पित रहे वो थे कुँवर सिंह नेगी 'कर्मठ' जो अन्त तक 2013 में 103 वर्ष की आयु तक समिति के सदस्य रहे। 1956 में स्थापित कण्वाश्रम विकास समिति ने विषम परिस्थितियों में अपना दायित्व निभाते हुए कण्वाश्रम में तथा सम्पूर्ण क्षेत्र में विकास हेतु कार्य किये। समय के साथ बदलाव हुए और सरकार की नीतियों के आदेश तहत 1992 में समिति का पंजीकरण कराया गया और इस का श्रेय उस समय समिति के

कण्वाश्रम विकास समिति के सदस्य

अध्यक्ष श्री चन्द्र सिंह रावत और महामंत्री श्री देवी प्रसाद डबराल को जाता है। मैं भी 1992 में भारतीय नौसेना से सेवानिवृत्ति होकर गांव में आ गया। मेरी कण्वाश्रम में रुचि तथा भावनाओं को देखकर 1998 में समिति के सदस्यों ने मुझे अध्यक्ष पद का दायित्व सौंप दिया। ये मेरे लिये एक बहुत बड़ी चुनौती थी क्यों कि सेना की पृष्ठभूमि से असैनिक क्षेत्र में और वो भी ग्रामीण क्षेत्र में कार्य करना मेरे लिए एक नया अनुभव था। समिति के बुजुर्ग सदस्यों ने जिस आस्था और विश्वास से मुझे ये पद सौंपा था, को जरूर ये विश्वास था कि इसमें कुछ करने की क्षमता है। उन सब के विश्वास को कायम रखने के लिए मैनें आज तक पूर्ण प्रयत्न किया।

सर्व प्रथम समिति द्वारा स्मारक का सौन्दर्यकरण कराना था। इस के लिए वन विभाग को सम्पर्क कर उनके सहयोग से परिसर के चारों ओर दीवार, सीढ़ियों तथा पक्के रास्ते का निर्माण कराया गया। पूरे क्षेत्र के विकास के लिए एकीकृत विकास योजना तैयार की गयी। इसमें उत्तराखण्ड सरकार के विभिन्न विभागों का सहारा लिया गया। इस योजना के अंर्तगत मालिनी नदी में एक झूला पुल का निर्माण, एक क्रित्रिम झील का निर्माण, पर्यटन गेस्ट हाउस में व्यवस्थाओं को पर्यटन की दृष्टि से ठीक करना, कण्वाश्रम को कोटद्वार से जोड़ने वाली सड़को को सुधारना, एक ध्यान केन्द्र का निर्माण तथा

कण्वाश्रम क्षेत्र में श्रमदान करते स्कूली छात्र/छात्राएं

सम्पूर्ण क्षेत्र का सौन्दर्यकरण का प्रस्ताव शासन को प्रेषित किया गया।

इस एकीकृत योजना को शासन तथा सरकार ने गम्भीरता से लिया तथा पर्यटन विभाग को इस पर एक रिपोर्ट तैयार करने को कहा। समिति के अथक प्रयासों के बाद पर्यटन गेस्ट हाउस की हालत में सुधार किया गया, ध्यान केन्द्र का निर्माण किया गया तथा मालिनी नदी पर पुल का निर्माण किया गया। पर झील का सपना वन विभाग की आपत्ति के कारण अभी भी अधूरा है। इस के अतिरिक्त समिति को दान में दी गयी भीमसिंहपुर ग्राम में भूमि पर सांसद मे0 जनरल बी0सी0 खण्डूरी द्वारा सांसद निधि से एक पुस्तकालय एवं संग्रहालय का निर्माण कराया गया।

इन सब के अतिरिक्त समिति ने अनेक सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु अन्य संगठनों का सहयोग किया। इसमें मुख्यत: हरिद्वार-कण्वाश्रम-कोटद्वार-रामनगर मार्ग के निर्माण हेतु आन्दोलन की पहल

करना। मालिनी घाटी में पर्यावरण की संवेदनशीलता को देखते हुए खनन पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु प्रशासन से निवेदन करना। समिति के सम्मुख अभी भी अनेक चुनौतियाँ हैं और उसमें से मुख्यत: हैं "भरत स्मारक" का निर्माण। समिति के अध्यक्ष पद का निर्वाह करते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि समिति के प्रयासों के द्वारा वो सभी कार्य पूरे होंगे और कण्वाश्रम एक बार फिर इस देश के मानचित्र पर उभर कर आयेगा।

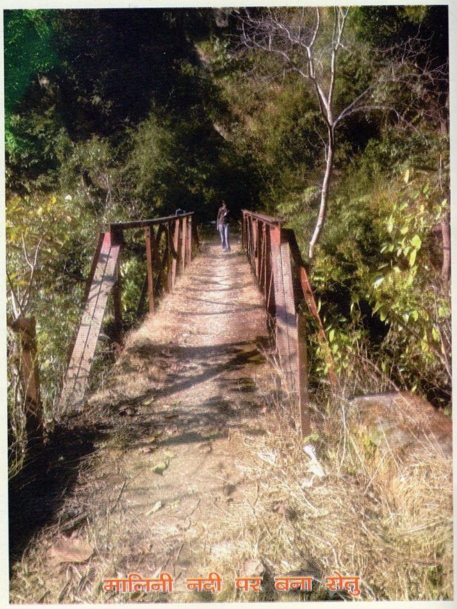

मालिनी नदी पर बना सेतु

मेला

मालिनी के पूर्वी तट पर चौकीघाट नामक स्थान पर सरकार द्वारा 1956 में कण्वाश्रम को दर्शाते हुए एक सांकेतिक स्मारक के शिलान्यास के फलस्वरूप उक्त स्थान पर हर साल बसन्त पंचमी को एक मेला लगने लगा। ये मेला कण्वाश्रम विकास समिति की देख-रेख में आयोजित किया जाने लगा। शुरू के वर्षो में इस क्षेत्र की जनसंख्या कम ही थी तो भीड़ भाड़ भी ज्यादा नही होती थी। ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण दुकानें भी कम ही लगती थी। पर इधर-उधर से कुछ दुकानदार कुछ छोटी-मोटी चीजें लेकर आ जाते थे, जिन्हे महिलायें विशेषकर बडे चाव से खरीदती थी। वैसे भी इस क्षेत्र में यातायात के साधनों के अभाव में लोगों का बाहर आना-जाना कम ही होता था और मनोरंजन के भी सीमित साधन होने के फलस्वरूप महिलायें मेले में अपनी जरूरत की छोटी-मोटी चीजें खरीदने जरूर आती थी। खान-पान का सामान भी बिकता था विशेषकर जलेबी। इस मेले में इतनी जलेबी बिकती है कि इसे

कण्वाश्रम परिसर में निर्मित चबूतरा

"जलेबी मेला" कहने में भी कोई परेशानी नही होनी चाहिए।

कुछ वर्षों तक ऐसा ही चलता रहा पर 1964 से जिला परिषद द्वारा इस मेले को मान्यता दिये जाने के उपरान्त विभिन्न विभागों द्वारा मेले में अपने स्टॉल लगाने शुरू कर दिये। इस माध्यम से विभाग द्वारा ग्रामीणों को विभिन्न विषयों पर जानकारी दी जाने लगी। कृषि, पशुपालन, उद्यान तथा अन्य विभागों द्वारा ग्रामीणों के बीच प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाने लगा। इसके तहत सबसे उत्तम गाय/बछिया, सबसे बड़ा या अच्छा फल या सब्जी उगाने वाले को पुरस्कृत किया जाने लगा। मेला करीब पाँच दिन चलता था। मेले की अवधि तथा उसका स्वरूप कण्वाश्रम विकास समिति, पर्यटन विभाग तथा प्रशासन के साथ मिलकर तय करती थी। मेले में इसके अलावा क्षेत्र के स्कूलों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाने लगा। मेला जहाँ लोगों के लिए एक मनोरंजन का साधन था वहाँ व्यापारियों के लिए धन अर्जन का माध्यम भी।

मेले में दुकानें नदी के पाट पर लगती थी और आज भी वहीं लगती है। बसंत पंचमी तक मालिनी में पानी की मात्रा कम हो जाती है तथा ज्यादातर पानी नहरों के माध्यम से सिंचाई के लिए उपयोग में चला जाता है। पहले सांस्कृतिक कार्यक्रम विभिन्न स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये जाते थे। ये

कार्यक्रम स्मारक परिसर में ही आयोजित किये जाते थे। वहाँ समिति द्वारा स्मारक के एक तरफ एक चबूतरे का निर्माण किया गया और इस चबूतरे के ऊपर स्कूली बच्चे तथा स्थानीय कलाकारों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते थे। सब लोग परिसर में स्थापित कण्व, कश्यप, दुष्यन्त, शकुन्तला तथा भरत का स्मरण कर उनके दर्शन कर तथा उनका आर्शीवाद लेकर वहीं बैठ कर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनन्द लेते थे।

पर समय के साथ क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि हुई और उसके साथ मेले में आने वाले जन मानस की भी। 1996 मेले के आयोजन के समय मैने इस बात को महसूस किया कि जनसंख्या और सुरक्षा की दृष्टि से परिसर में सीमित स्थान होने के कारण वहाँ अत्यधिक भीड़ होने से वहाँ कुछ अनहोनी हो सकती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए मैने 1998 में कण्वाश्रम विकास समिति का अध्यक्ष का पद सम्भालने के बाद मेले का आयोजन नदी के किनारे एक स्थान पर कराये जाने का समिति की सभा में प्रस्ताव रखा जिसका कुछ सदस्यों द्वारा विरोध भी किया गया। जब उक्त स्थान पर झाड़ी इत्यादि साफ कर मैदान दर्शकों के बठने के लिए और ऊपर के स्थल पर मंच तैयार किया गया तो सब ने नई व्यवस्था को खूब सराहा। उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन के लिए मंच उक्त स्थान पर नदी के किनारे बनाया जाने लगा और स्मारक परिसर में सब अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने जाते थे और वहाँ भीड़ भाड़ कम हो गयी।

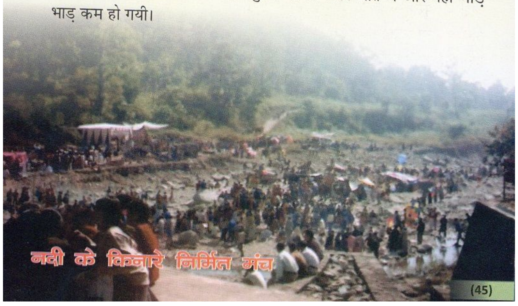

नदी के किनारे निर्मित मंच

कुछ साल ये परम्परा कायम रही पर फिर एक बार मेले में आने वाली संख्या में धीरे-धीरे वृद्धि के कारण मेले के आयोजन के लिए एक नये स्थान की तलाश की जने लगी जहाँ 25 से 30 हजार लोग मेले के कार्यक्रम का आनन्द ले सकें। इस बार मालिनी के पश्चिमी तट पर एक बड़े भू भाग का चयन किया गया।

उक्त स्थान की झाड़ी साफ कर के समतल किया गया। समिति द्वारा शासन को उक्त स्थान पर पूर्व में एक झील बनाने का प्रस्ताव भेजा गया था पर वन विभाग के असहयोग के कारण योजना धरातल पर नही उतर सकी।

मेले उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक परम्परा का एक अभिन्न अंग है। इन मेलों में लोगों का मनोरंजन के अलावा एक दूसरे से मिलने जुलने का अवसर मिल जाता है। मेला यानि ''मिलन''

कण्व घाटी में पौराणिक अवशेष

प्राकृतिक विभीषिका 1991 इस क्षेत्र में मूसलाधार वर्षा के रूप में बरसी पर उससे इस क्षेत्र में किसी प्रकार का कोई नुकसान नही हुआ। कण्वाश्रम स्मारक और मालिनी के तट के समीप पानी की मोटी धारायें जो पहाड़ से बह कर आयी ने धरती की ऊपरी सतह की मिट्टी को अपने साथ बहा कर ले गई। ज्यादा नही पर थोड़ा सा जिस के कारण धारती के नीचे हजारों वर्षों से दबे शिलालेख/भग्नावशेष तथा मूर्तियाँ उभर कर बाहर आ गई। जिस जगह ये शिलालेख प्रकट हुए है ऐसा प्रतीत होता है कि धरती के भीतर वहाँ भवन के और अवशेष भी मौजूद हैं।

जब सब की नजर इन शिलाओं पर पड़ी तो सब का विश्वास और दृढ़ हो गया कि इस क्षेत्र में भारत की पौराणिक सभ्यता रही होगी। इन शिलाओं का अध्ययन करने गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर से कुछ अधिकारियों ने कण्वाश्रम का दौरा किया तथा इन में से कुछ शिलालेखों को वे अपने साथ श्रीनगर ले गये। विश्वविद्यालय की एक रिपोर्ट के अनुसार ये

वन विभाग द्वारा दीवार में चिने गये शिलालेख

शिलालेख तथा स्तम्भ 10 से 12 वीं सदी के अनुमानित हैं। इसके बाद उनके द्वारा या सरकार या किसी और शोधकर्ता के द्वारा कोई उत्खनन कार्य इस क्षेत्र में नही किया गया। 1998 में वन विभाग द्वारा उक्त क्षेत्र में एक दीवार का निर्माण किया गया। इस दीवार में अन्य पत्थरों के अलावा उन सभी शिलाओं को भी चिन दिया गया जो वहाँ भूमि कटाव से धरती के आहर आ गई थी।

पुरातत्व विभाग, देहरादून के सदस्य दल के साथ लेखक

जुलाई 2012 में एक बार फिर अत्याधिक वर्षा होने के कारण उसी क्षेत्र में मिट्टी के बह जाने से कई और शिलालेख और स्तम्भ धरती से उभर कर बाहर आ गये। पर इस बार समिति ने इस होनी को संज्ञान में लेते हुए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के दिल्ली स्थित मुख्यालय को चित्रों सहित ई-मेल द्वारा सूचित किया। विभाग के मुखिया ने तुरन्त कार्यवाही करते हुए अपने क्षेत्रीय देहरादून स्थित कार्यलय को उक्त स्थान का निरीक्षण करने को कहा। सितम्बर 2012 में देहरादुन पुरातत्व विभाग का तीन सदस्यों का एक दल कण्वाश्रम पहुँचा और उन्होने उक्त क्षेत्र का बारीकी से निरीक्षण कर कई

कार्यालय अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
देहरादून मण्डल
'धरोहर', त्यागी रोड़, देहरादून
उत्तराखण्ड – 248001
फैक्स / फोनः 0135–2628027
फोनः 0135–2723390

भारत सरकार
Govt. of India
सत्यमेव जयते
प्रत्नकीर्तिमपावृणु

O/o Superintending Archaeologist
Archaeological Survey of India
Dehradun Circle
'Dharohar', Tyagi Road, Dehradun
Uttarakhand - 248001
Fax/Phone: 0135 -2628027
Phone: 0135-2723390
E mail- circledeh.asi @gmail.com

पत्र सं0. Letter No. 2 / 69 / 2007–स्मा0 1043

दिनांकः Dated- 11.10.2012

सेवा में,

महानिदेशक
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
जनपथ नई दिल्ली –11

विषयः जनपद पौड़ी (उत्तराखण्ड) स्थित कोटद्वार नामक कस्बे के निकट स्थित कण्वाश्रम स्थल से प्रस्तर कलाकृतियों के प्रकाश में आने एवं स्थल का निरीक्षण के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त के सन्दर्भ श्री वी0एस0 रावत, ले0 कमान्डर (से0नि0) द्वारा जनपद पौड़ी में स्थित कोटद्वार कस्बे के निकट स्थित कण्वाश्रम नामक स्थल से प्राप्त प्रस्तर कलाकृतियों के प्रकाश में आने एवं उक्त स्थल का निरीक्षण कराने का अनुरोध अपने ई मेल पत्र द्वारा महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण से किया गया था। महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के पत्रांक दिनांक 27.07.12 के सन्दर्भ में मण्डल कार्यालय की तकनीकी टीम ने अधीक्षण पुरातत्त्वविद् के निर्देशन में दिनांक 21.09.12 को उक्त स्थल का निरीक्षण किया जिसकी आख्या आपके सुलभ अवलोनार्थ प्रेषित है।

भवदीय

संलग्नकः उपरोक्तानुसार।

ह0-
अधीक्षण पुरातत्त्वविद्

प्रतिलिपिः–श्री वी0एस0 रावत, ले0 कमान्डर (से0नि0), पो0–कलालघाटी, कोटद्वार, जनपद–पौड़ी (उत्तराखण्ड)को सूचनार्थ।

अतुल 12/10/12
अधीक्षण पुरातत्त्वविद्

D:\VERMA\letters\letters hindi

पुरातत्व विभाग, देहरादून द्वारा मुख्यालय दिल्ली को प्रेषित आख्या

कण्वाश्रम कैसे पहुँचे

उत्तराखण्ड देव भूमि में प्रवेश करने के दो ही द्वार हैं पहला है कोटद्वार और दूसरा है हरिद्वार। दोनों ही स्थान देश के अन्य स्थानों से रेल तथा सडक से जुडे हुये हैं।

कोटद्वार राजधानी दिल्ली से उत्तर-पश्चिम दिशा में है तथा मेरठ-मवाना-बिजनौर-नजीबाबाद होते हुए सड़क से 200 कि.मी. दूर है। कोटद्वार पहुँचने पर कोटद्वार से कण्वाश्रम पक्की सड़क से मोटाढांग-हल्दूखाता-कलालघाटी होते करीब 12 कि.मी. पर है। दिल्ली से कोटद्वार के लिए दो ट्रेन चलती है। एक गढ़वाल एक्सप्रैस जिसका दिल्ली से चलने का समय सुबह 7 बजे है तथा दूसरी मसूरी एक्सप्रैस जो दिल्ली से रात 10.30 पर छूटती है।

हरिद्वार, जो कि जो कि इस देश का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। वहाँ रेल, सड़क या हवाई जहाज से पहुँचा जा सकता है। जौलीग्रान्ट एयरपोर्ट हरिद्वार से करीब 30 कि.मी. की दूरी पर है। दिल्ली से हरिद्वार के लिए अनेक ट्रेन आती है। सड़क के रास्ते हरिद्वार-मेरठ-खतौली से होते हुए पहुँचा जा सकता है। हरिद्वार से गैडीखाता और लालढांग से जंगल के रास्ते से कण्वाश्रम 47 कि.मी. है पर हरिद्वार-गैडीखाता-नजीबाबाद के रास्ते से यह 84 किमी है।

कण्वाश्रम के सम्बन्धित स्थल

कण्वाश्रम के निकटवर्ती घने जंगलों तथा मालिनी नदी की घाटी में अनेक रमणीय और ऐतिहासिक तथा पौराणिक दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण स्थल हैं। ये सब स्थल कण्वाश्रम से खंडित पैदल मार्गों से जुडे हैं। पर्यटन की दृष्टि से इन स्थलों का विकास भी भरत स्मारक के निर्माण से जुडा हुआ है। इन सब स्थानों के वर्तमान नाम पुराने नामों के विकृत या अपभ्रंश रूप है। कुछ के नाम अत्यधिक बदल गये हैं। यह निश्चित है कि इस क्षेत्र के सभी स्थलों के नाम उस समय मौजूद महापुरुष के नाम से जुडे हुए थे और ये सब स्थल वर्तमान स्मारक से करीब 10 से 15 किमी के घेरे में आते हैं। करीब 25 वर्ष पहले तक इन सभी रास्तों में लोगों का आना जाना होता था पर नये पक्के मार्ग बनने के फलस्वरूप इन पैदल मार्गों से यातायात कम हो गया और ये सब मार्ग अब खंडित दशा में हैं। कुछ वर्षों के बाद ये रास्ते विलुप्त हो जाऐंगे और वन के आगोश में समा जाऐंगें।

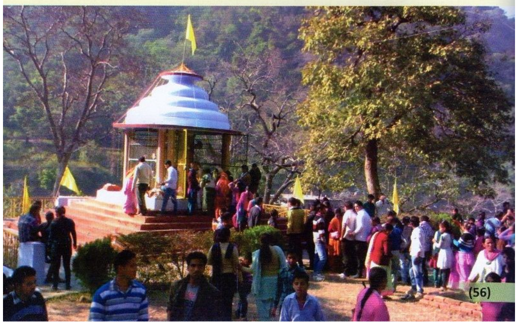

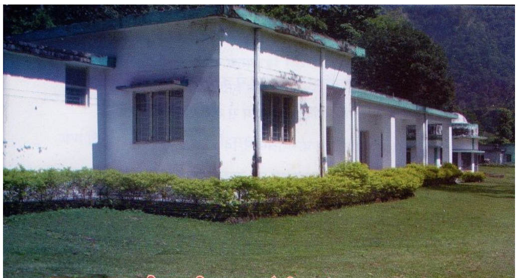

गढ़वाल मण्डल विकास निगम का चौकीघाट (कण्वाश्रम) में गेस्ट हाउस

1. **सांत्यालिधार या शकुन्तला की धार** यह स्थान कण्वाश्रम से करीब पैदल मार्ग से 10 कि.मी. नदी के उद्गम स्थान की ओर है।
2. **कीमसेरा या कणवसेरा** यह स्थान नदी के उद्गम से करीब 5 कि.मी. की दूरी पर है।
3. **कस्याली या कश्यप स्थली** यह कश्यप ऋषि का आश्रम रहा होगा जो कण्व ऋषि के समकक्ष थे। यह स्थान कण्वाश्रम से पैदल मार्ग से करीब 20 कि.मी. होगा।
4. **विस्तरकाटल या विश्वामित्र की गुफा** कण्वाश्रम से करीब 12 कि. मी. की दूरी पर स्थित है।
5. **मल्या** मालिनी नदी का उद्गम स्थल, कण्वाश्रम से करीब 20 कि.मी. की दूरी पर है।
6. **सहस्त्र धारा** एक स्थान पर पहाड़ से अनेक छोटी धारायें गिरती है।
7. **सतिमठ** कण्वाश्रम से करीब 1 किमी की दूरी पर नदी के किनारे स्थित है।
8. **महापगढ़** प्राचीन शिव शक्ति मंदिर कण्वाश्रम से जंगल के रास्ते करीब

22 कि.मी. है।

9. **शुन्य शिखर** पुराना मन्दिर कण्वाश्रम से करीब 10 कि.मी. है।

10. **जयदेव मंदिर** प्राचीन मंदिर कण्वाश्रम से करीब 3 कि.मी. है।

11. **चरेख महर्षि** का आश्रम कण्वाश्रम से 14 कि.मी. दूर है।

इस के अतिरिक्त कण्वाश्रम के समीन वन विभाग द्वारा एक मृग विहार भी बनाया गया है। एक बडे विस्तृत क्षेत्र में फैले इस मृग विहार में हिरन, चितल, सांभर देखने को मिलते हैं। इस मृग विहार के एक कोने में बच्चों के मनोरंजन के लिए बहुत से झूले भी लगाये गये हैं। कण्वाश्रम में रहने के लिए गढ़वाल मंडन विकास निगम द्वारा संचालित एक गेस्ट हाउस भी है जिसमें रहने तथा खाने की भी व्यवस्था है।

नाम	–	**ले० कमाण्डर वीरेन्द्र सिह रावत (से०नि०)** भारतीय नौसेना
जन्म तिथि	–	08 दिसम्बर 1951
जन्म स्थान	–	पौडी, जिला – पौडी गढवाल
वर्तमान पता	–	ग्राम – मानपुर, पत्रालय – कण्वघाटी, कोटद्वार जिला – पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड
शिक्षा	–	सैनिक स्कूल, रीवा (म0प्र0) से उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्रीय प्रतिरक्षा एकादमी (NDA), खड्कवासला, पूना से प्रशिक्षण कर भारतीय नौसेना 1971 में कमिशन लिया। Naval College of Engineering, Lonavala से Marine इंजीनियरिंग तथा Airforce Technical College, Jalahalli, Bangalore से Aeronautical इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की तथा 1983 में Militry College of Telecommuniation से कम्प्यूटर में प्रशिक्षण प्राप्त किया।
अभिरूची	–	अध्ययन, लेखन, खेल, सामाजिक कार्य
सम्पर्क	–	9412413644, 01382242252
ई-मेल	–	virenderrawat54@gmail.com